

सतत विकास लक्ष्यों हेतु कृषक महिलाओं की भूमिका

बिंदिया दत्त¹ व रंजना वर्मा²

¹सह प्राध्यापक प्रसार शिक्षा व संचार प्रबंधन विभाग

²प्राध्यापक खाद्य विज्ञान, पोषण व तकनीकी विभाग

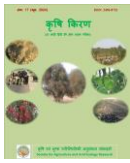
चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हि० प्र०

सतत विकास एक ऐसा विकास है जहां आने वाली पीढ़ी की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझोता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा किया जाए। यह 4 स्तंभों पर निर्भर करता है:- सामाजिक विकास, आर्थिक विकास, पर्यावरण संरक्षण व सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण। सतत विकास के लिए इस बात पर बल देने की आवश्यकता है कि हम भावी योजनाओं, कार्यक्रमों को भावी प्रगति से जोड़ सकें। सतत विकास लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा, वर्तमान और भविष्य में लोगों और ग्रह के लिए शांति और समृद्धि हेतु तैयार किया गया खाका है जिसमें 17 सतत विकास लक्ष्य हैं जो वैश्विक साझेदारी वाले विकसित और विकासशील सभी देशों के लिए आवश्यक हैं। यह सतत विकास लक्ष्य इस प्रकार है :-

- गरीबी की पूर्णतः समाप्ति
- भुखमरी की समाप्ति
- अच्छा स्वास्थ्य और जीवन स्तर
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
- लैंगिक समानता

- स्वच्छ जल एवं स्वच्छता
- सस्ती और स्वच्छ उर्जा
- अच्छा काम और आर्थिक विकास
- उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा
- असमानता की कमी
- टिकाऊ बाहरी और सामुदायिक विकास
- जिम्मेदारी के साथ उत्पादन व उपभोग
- जलवायु कारवाइ
- पानी के नीचे जीवन
- भूमि पर जीवन
- शांति और न्याय के लिए संस्थान
- लक्ष्य प्राप्ति के लिए सामूहिक साझेदारी

भारत एक कृषि प्रधान देश है जो 6 लाख गांवों में फैला हुआ है। यहाँ की 72 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है। अतः यह कहना अनूचित नहीं होगा की देश की प्रगति गांवों पर निर्भर करती है। गाँव हमारे देश के विकास की रीढ़ की हड्डी है क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था व बढ़ती हुई जनसंख्या की भोजन पूर्ति गांवों द्वारा ही पूरी की जाती है। गांवों द्वारा उत्पादित कच्चे माल पर ही हमारा औद्योगिकरण निर्भर करता है। भारत में कृषि उत्पादन में महिलाओं की ओसतन 55 से 66 प्रतिशत की भागीदारी रहती है।



एक अध्ययन में पाया गया है की एक हेक्टेयर फार्म पर एक महिला एक साल में 3485 घंटे काम करती है (जय श्री, 2015)। महिला घर और समुदाय की जिम्मेदारिया निभाते हुए फल उत्पादन, पशुपालन प्रबंधन, मत्स्य पालन और वानिकी में महत्वपूर्ण योगदान देती है। महिलाओं के कृषि क्षेत्र में योगदान से विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। महिलाओं के कृषि व सामाजिक विकास में भागीदारी से हमारे सतत विकास के अधिकतर लक्ष्यों जैसे कि गरीबी की पूर्णतः समाप्ति, भूखमरी की समाप्ति, अच्छा स्वास्थ्य और जीवन स्तर, स्वच्छ जल एवम स्वच्छता, अच्छा काम और आर्थिक विकास, उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढाँचा, जिम्मेदारी के साथ उपभोग और उत्पादन, जलवायु कारवाई जैसे लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

कृषि एक ऐसा क्षेत्र है जो कि लघु स्तर पर अपनाये जाने पर गरीबी और भूखमरी को दो से चार गुणा कम करने में एक अहम भूमिका निभा सकता है। एक अध्ययन में यह पाया गया है की वैश्विक स्तर पर महिलाएं 43 प्रतिशत तक कृषि क्षेत्र में संलग्न हैं व पचास प्रतिशत खाद्य उत्पादन महिलाओं द्वारा किया जाता है। अतः यह आंकड़े यह बताते हैं कि कृषि व कृषि संबंधित तकनीकी विकास की महिलाओं को सही जानकारी भूखमरी जैसे सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति में उनकी एक अहम भूमिका बना सकती है।

आजकल के समय में सभी व्यक्तियों का रुझान रसायन मुक्त भोज्य पदार्थों को अपनाने की तरफ हो रहा है व शहरीकरण के कारण व काम काजी महिलाओं के पास कम समय होने के कारण कृषक महिला समूह खाद्य परिरक्षण व प्रसंस्करण अपनाते हुए लघु स्तर पर उधमिता अपना रही गई जिसमें वह घर बैठे ही अपने परिवार की आर्थिकी को सुदृढ़ कर रही हैं अतः देश के विकास में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से भाग ले रही हैं व गरीबी को कम कर सतत विकास लक्ष्यों को बल दे रही हैं।

महिलाएं अपने घरों के आसपास छोटी सी बगिया में पोषण से भरी तरह- तरह की साग- सब्जियां उगाकर कई तरह के जरूरी पोषक तत्वों की जरूरतों को पूरा करती हैं ,वही सदियों से चले आ रहे पोषण युक्त खाद्यान भी उपलब्ध करवा रही हैं। महिलाएं रासायनिक खाद्यानों की महत्ता को समझते हुए प्राकृतिक खेती को सहजता से अपनाते हुए सतत विकास के अच्छे स्वास्थ्य वाले लक्ष्य को उपलब्ध करने में अहम भूमिका निभा सकती हैं, जरूरत है सिर्फ उन्हें ज्ञान व जानकारी देने की ताकि वह अपने व अपने परिवार की पोषण संबंधित जरूरतों को पूरा कर सकें।

अच्छे स्वास्थ्य और जीवन स्तर से अप्रत्यक्ष रूप द्वारा महिलायें अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी दे सकती हैं क्योंकि यदि बच्चे का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य



अच्छा होगा तो स्कूलों में ड्राप आउट संख्या कम होगी जिससे हमारे समाज में बुद्धिमान व योग्यशाली व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि होगी जो देश के विकास में अमूल्य योगदान दे पायेंगे। महिला किसान अपने खेतों में उगने वाले उत्पादों को बाजार मुहैया करवाने के लिए महिला किसान उत्पादन कंपनियों का गठन कर रही हैं। अतः इन गतिविधियों से महिलाएं आर्थिक विकास उद्योग और बुनियादी ढांचा जैसे सतत विकास उद्देश्यों को भी संभव बना पा रही हैं। महिलाओं की अर्थव्यवस्था में भागीदारी हमारी स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा और पर्यावरण के विकास को सुचारू रूप से चलाने में सहायक हो रही है। यदि भारत में 50 प्रतिशत कार्यभार में महिलाओं की भागीदारी हो तो भारत अपने विकास को 1.5 प्रतिशत से 9 प्रतिशत बढ़ा सकता है।

महिलाएं विश्व में प्राकृतिक संसाधनों जैसे की पानी, जलावन लकड़ी, भोजन और जंगलों इत्यादि की उपभोगकर्ता व प्रबंकरता हैं क्योंकि घरेलू कार्य व अन्य अनौपचारिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी अधिकतर है अतः प्राकृतिक संसाधनों का सही पैमाने पर उपयोग हमारे सतत विकास लक्ष्यों की उपलब्धि में अहम भूमिका निभा सकता है। महिलाएं परिवार नियोजन अपनाकर बढ़ती

हुई जनसंख्या पर विराम लगा सकती हैं जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ रहे बोझ को कम किया जा सकता है। अतः प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से महिलाएं जिम्मेदारी के साथ उत्पाद और उपभोग व जलवायु परिवर्तन पर भी काफी हद तक नियंत्रण पाने में अहम भूमिका निभा सकती हैं।

निष्कर्ष:- समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महिलाएं हमेशा से आगे रही हैं। उनके अद्वितीय दृष्टिकोण, कौशल और अनुभव उन्हें समाज में महत्वपूर्ण प्रभाव डालने में सक्षम बनाते हैं। जब सतत विकास की बात आती है तो महिलाओं में विशिष्ट गुण होते हैं जो उन्हें बदलाव के लिए स्वाभाविक चैंपियन बनाते हैं। महिला सशक्तिकरण सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण ही नहीं अपितु आवश्यक है। किसी भी देश के विकास के लिए वहां के मुख्यवर्ग जो की महिलाएं हैं उनकी भूमिका व योगदान को नकारा नहीं जा सकता है क्योंकि हमारी महिलाएं हमारे परिवार, समाज, व देश की रीढ़ की हड्डी हैं। यह ही वह वर्ग है जो प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर व अपने कार्यभार को करते हुए देश की अर्थव्यवस्था को सुनिश्चित कर सकती हैं। अतः सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु महिलाओं को अपने आप को पहचाना, जानना और कार्यान्वयन करना आवश्यक है।